JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# इदन्नमम : स्त्री अस्मिता का उपन्यास

राधा पटेल (शोधार्थी)

डॉ. पुष्पा दुबे (निर्देशिका)

हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केन्द्र

महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय छतरपुर, मध्यप्रदेश 471001

सारांशः– आधुनिक हिन्दी लेखिका मैत्रेयी पुष्पा आज के समाज के ताने–बाने को अच्छे से जान समझ रही है। इसलिए वह अपनी नायिका को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास कथा की शुरूआत से ही करती है क्योंकि यह अक्सर देखा जाता है कि परिवार और समाज द्वारा स्त्रियों की इच्छाओं और आकांक्षाओं का दमन निरंतर किया जाता है। इसके समाधान के लिए साहसी और सशक्त नायिकायें ही मार्ग प्रशस्त करेंगी। जब नायिकाओं के द्वारा अर्थोपर्जन की प्रकिया में खुद को स्थापित कर लिया जाएगा तो अन्य समस्याये स्वतः ही कम/न्यून हो जाएगी।

बीजबिंदुः– स्त्री अस्मिता, साहसी नारी, संघर्षशीला, आत्मनिर्भर

प्रस्तावनाः– आधुनिक हिन्दी लेखिका मैत्रेयी पुष्पा के द्वारा रचित 'इदन्नमम' (1994) तीसरा उपन्यास है जिसने उन्हे साहित्य जगत में महान उपन्यासकार के रूप में स्थान दिलाया क्यांकि पाठक वर्ग ऐसी ग्रामीण स्त्रियाँ जो अपने अधिकारों के लिए जुझारू है तथा अपनी अस्मिता का बोध कर चुकी है, प्रेमचंद और रेणु के यहाँ देखने का आदी रहा है यथा–मैला आँचल, गोदान, इसके बावजूद लेखिका ने ग्रामीण स्त्रियों का गाँव ही मुख्यधारा में ला दिया जो पुराने मापदण्डों से भिन्न है।

मैत्रेयी पुष्पा अपनी लेखनी से जिस भ्रष्ट, अश्लील, पुरुषप्रधान समाज का बेबाकी से अंकन ही नहीं चित्राँकन भी करती है जो पाठकों के लिए बहुत सराहनीय है। इसके साथ ही मैत्रेयी पुष्पा स्त्री अस्मिता के प्रश्नों को भी अपनी रचनाओं में स्थान देती है जो अंततोगत्वा उसके समाधान के रूप में पात्रों के विकास के साथ उभरता है, 'इदन्नमम' में इसी अस्मिता बोध का मंदा नायिका के रूप में प्रतिनिधित्व करती है।

स्त्री अस्मिता का प्रश्न केवल व्यक्तिगत अस्मिता की परिधि से नहीं घिरा है बल्कि इसका दायरा सामाजिक अस्मिता तक फैला है जहां इसके समक्ष चुनौतियों के रूप में खड़े पितृसत्तात्मक संबंध, मूल्य और संस्थाए। इसके अलावा स्त्री का स्वयं की अस्मिता का बोध भी इसके बीज में है। स्त्री विधा के रूप में उपन्यास बहुत ही सशक्त विधा के रूप में जाना जाता है जिसमें स्त्री की आकांक्षाओं, इच्छाओं की समूची जीवटता का वर्णन उपस्थित होता है। इसी को रोहिणी अग्रवाल कहती है कि

''स्त्री विमर्श एक दृष्टि है जो परम्परा के दबाव, संस्कार एवं पूर्वगृह से मुक्त होकर व्यक्ति की पहचान लिंग में नहीं, मनुष्य में प्रस्तावित करने की उर्ध्वमुखी चेतना देती है।'' 1

समकालीन लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा अपने सशक्त वैचारिक चिंतन और लेखन से उपन्यास जगत को अपनी ग्रामीण नायिकाओं से परिचित कराती है। उनके द्वारा लिखित उपन्यास 'इदन्नमम' में स्त्री नियति एवं चेतना के उन पक्षों को कथानक में लाया गया हैं जो पारम्परिक भारतीय समाज में नए कलेवर को प्रस्तुत कर रहे है। स्त्री पर केन्द्रित अन्य उपन्यासों की तुलना में 'इदन्नमम' इन अर्थों में ही भिन्न नहीं है कि वह विस्तृत कलेवर का उपन्यास है बल्कि इसलिए भी कि यहाँ स्त्री प्रश्न अलग विमर्श के रूप में बस उभरते नहीं बल्कि उनकी मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त करते चलते है। इस उपन्यास की कथा बुन्देलखण्ड के बीहड़ इलाके के सोनपुरा और श्यामली नामक दो पिछड़े गाँवों के सामान्य लोगों के भोगे हुए जीवन का यर्थाथ है। यह कथा तीन पीढियों के आत्मसंघर्ष और बाह्यसंघर्ष को भी अपने में समाहित किए हुए है। इस उपन्यास को बुंदेलखण्ड के ग्रामीण लोगों की महाकाव्यात्मक आख्यायिका भी कहा जाता है। जहाँ किसान के मजबूर बनने और उसमें भी जीवनयापन कठिन होता है। ग्रामीणों के बीच मंदा राजेन्द्र यादव के शब्दों में वह सशक्त पात्र है जो

''गाँव की मंदा एक अजीब, निरीह, निष्कवच नारी का चरित्र लेकर उभरती है। उसके साथ एक भरी–पूरी दुनिया, रूढ़ियों, परम्पराओं, अभ्यासों, आकांक्षाओं, ईर्ष्याओं से भरी एक दूसरी के अधिकार झपटते, कुचलते, चूसते और न्याय की रक्षा करते लोगों की जिन्दगी है।''

मैत्रेयी पुष्पा 'इदन्नमम' के माध्यम से ग्रामीण नायिकाओं को स्थान मात्र नहीं दिलाती हैं वह बुंदेलखण्ड के उन बीहड़ प्रदेशों के वंचितो को भी मुख्य धारा में लाती है जिन्हें उनकी जमीन से, जड़ो से इसलिए अलग कर दिया गया क्योंकि वे भूमण्डलीकरण के साँचे में फिट नहीं बैठते है। उन्हें उत्पाद बना दिया गया जिसके माध्यम से अभिलाख सिंह, राजा साहब जैसे पात्र अपनी स्वार्थ सिद्वि करते है अर्थात् उनके परिश्रम का मेहताना खा जाते है और हद तो तब होती है कि उनकी औरतों को बेंचकर उनके चरित्र पर सवाल उठाए जाते है।

''हमारी समझ में नहीं आ रहा कि तुमसे किस तरियाँ कहे बिटिया!
हमारे डेरों में औरतें हाहाकार मचा रही हैं। पर हम ही चुप्पी साधे हैं। गम खाए हैं। हमारी जनी–मानसें बेची जाने लगी हैं अब। जिन्दे आदमियन का व्यौपार करने लगे हैं अभिलाख।''

''गोपालपुरा के पहाड़ पर लगा राउत कहता है कि अभिलाख सिंह उज्जैन में बेंच आए थे बाय। पैंतीस सौ रूपइया में!''2

मैत्रेयी जी ने इस उपन्यास को तेईस अध्यायों में बाँटा है जहाँ स्त्री अस्मिता से लेकर विभिन्न वर्गों के संघर्षो का पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती है कि किस प्रकार जर, जमीन, जोरू तीनों को शक्तिशाली लोग अपनी बपौती बना लेते है लेकिन अब कमजोर अपने लिए संबल खड़ा करेगें और उनके खिलाफ अपनी मुहिम लड़ेंगे। मंदा की कथा अब सिर्फ उसकी न रहकर उन कैशरों के आसपास जा पहुँची जहां जड़ और जमीन के लिए जनता और माफिया के मध्य संघर्ष का दौर चल रहा है। जहां संबंधो के तार टूट रहे है। भरोसे की नींव का तानाबाना बिगड़ चुका है। जिसे देखकर अचानक लेखिका सहम कर कहती है कि ''यह मैं ग्रामीण जीवन के किस भाग को समाज की धारा में ला रही हूँ कि बात खून–खराबे के चलते मालिक और मजदूर के आपसी रिश्ते समझा रही हूँ। बसन्त में इधर साम्प्रादायिक उपद्रव के कारण नर–संहार हो रहे है तो मण्डल कमीशन के चलते आत्मदाहों की घटनाएँ आम होती जा रही है! क्या मैं ग्रामीण नर–नारियों के मासूम चरित्रों के विरोध पर तुली हूँ, जो ईंट से ईंट बजा रहे है। शहरों में गाँवों की तस्वीर बिगाड़ने वाली मैं अपराधिनी और गाँवो के जीते–जागते पात्रों को रतन यादव और गोविन्द सिंह ककाजू जैसे खलपात्र बनाने की गुनहगार मैत्रेयी, अब तुम्हारा बसर कहाँ होगा? यशपाल जवाब माँगेगा। दरोगा भईया नजरों से गिरा देंगे। और स्त्री पात्र, जिन्हें रोना, गाना, रूठना, मनाना, जैसी क्रिया–प्रक्रियाओं के लिए जाना जाता है, बस इसलिए पाठकों का मन मोह लेती हैं, मन्दा इनमें कहाँ खटकेगी? कुसुमा को कौन पास फटकने देगा? ये कुलटा पुंश्चलियों और डायन का रूप.....सचमुच, मैं क्या मर्दमार औरतों को लेकर साहित्य में जा रही हूँ? या मैं खुद भी इसी प्रकृति की औरत हूँ, जो शहर के लोगों के सामने गूँगी गुडिया बन जाती हूँ? ऐसे सवाल उपन्यास को लिखते समय, छपकर आने के बाद और समीक्षाएं पढ़ते हुए मुझे घरते रहे, मगर मैं मन्दा की तरह ही कहती रही इदन्नमम। 'इदन्नमम' संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता ह– यह मेरे लिए नहीं यह शब्द मन्दाकिनी के जीवन को व्यक्त करता है।'' 3

साहित्य में स्त्री को न्याय दिलाने के लिए हमे साहसी नारी की जरूरत है लेखिका अपने साहित्य में बहुत बरीकी से स्त्री विमर्श के एक–एक पहलु को प्रस्तुत करती है जिस प्रसंग को परम्परागत समाज पर्दे में छिपाकर रखता है उस प्रसंग को मैत्रेयी जी वास्तविक ढंग से प्रस्तुत करने में भी नहीं हिचकिचाती।

आज की नारी पुरातनता से अलग नए संस्कारों को ग्रहण किए हुए है। जो स्वतंत्रता के साथ ही अपनी अस्मिता की खोज में नए संस्कारों को नवीन अर्थ पदान करती है। इसी के लिए प्रभा खेतान ने लिखा है–

''आज हमे सोचना है कि अपनी अस्मिता को पुनः कैसे परिभाषित करे? कैसे अपनी और अपने समाज की रूपरेखा तैयार करे? हमारे सामने पहले से कोई संयुक्त आदर्श मौजूद नहीं है। अतः आज स्त्री का मसीहा स्त्री खुद है।'' 4

इस कथन को कथा की नायिका चारितार्थ करती है वह केवल पाँचवी तक पढ़ी है लेकिन वह अपने आत्मसंघर्ष और साहस के कारण पन्द्रह गाँवो को एक मुहिम या सूत्र में बाँध लेती है जो भ्रष्टाचार, समाज की गंदी राजनीति के खिलाफ अपने कदम बढ़ाते है और उससे मुक्ति भी प्राप्त करते हैं। यथा– ट्रैक्टर खरीदना, चुनाव में मतदान न करना, मजदूरों के हक में लड़ाई आदि। मंदाकिनी नायिका के रूप में सचमुच नारी शक्ति का रूप है जो दृढ़ संकल्पित होकर अन्याय के खिलाफ अपनी आवाज मुखर करती है। उपन्यास की मूल समस्या नारी शोषण है लेकिन नारी संघर्ष के माध्यम से इससे मुक्ति के लिए लेखिका प्रेरित करती है।

उपन्यास की शुरूआत सोनपुरा के स्वर्गीय जागीरदार सुभाग सिंह की पत्नी और वहाँ के भूतपूर्व प्रधान महेन्द्र सिंह की माँ का अपनी पोती मंदाकिनी को श्यामली ले जाने से होती है। इसका कारण यह होता है कि उनकी बहू प्रेमा अपने बहनोई रतन यादव के कहने पर अपनी बेटी को अपने साथ रखने के लिए कोर्ट में केस कर देती है। जबकि दादी (बऊ) अपनी पोती की रक्षा रतन यादव जैसे व्यक्ति से करना चाहती है जिसने कई विधवाओं की सम्पत्ति निगल रखी है। वह श्यामली के दादा पंचमसिंह के यहा शरण लेती है। उनके परिवार में भाई, गोविन्द सिंह और बेटे दरोगा सिंह, अमर सिंह और यशपाल है। दरोगा सिंह का बेटा मकरन्द यही रहता है जिसके साथ मंदा का बचपन बीता है। इस गाँव में और अन्य पात्र भी रहते है जैसे– डाकू डबल बब्बा, स्कूल मास्टर बन्ने साहब, चीफ साहब आदि। इन सबके साथ ही कथा आगे बढ़ती चलती है।

मंदा के लिए चल रहा कोर्ट केस उसको माँ के केस वाससी से खत्म होता है जो उसके सोनपुरा वापसी के लिए द्वार खोलता ह। इसी बीच मंदा की सगाई मकरन्द सिंह से हो जाती है लेकिन मंदा के साथ ज्यादती हो जाने को कारण बनाकर मकरन्द की माँ इस सगाई को तोड़ देती है। यह मंदा के लिए बड़ा आघात था। मंदा इस आघात के बाद भी अपने लिए जीने का रास्ता ढूँढ लेती है। जो उसका अपने पिता का अस्पताल फिर से चलाने का सपना होता है। मंदा पाँचवी पास होने के बावजूद अपने धार्मिक उपदेशों से आस–पास के पन्द्रह गाँवो को अस्पताल खोलने को लेकर एकत्रित करती है, सभी प्रधानों के हस्ताक्षर करवाती है, जिसमें ग्रामीणों को क्या–क्या समस्याऐं है का विवरण हाता है। जब क्षेत्र के विधायक राजा साहब वोट माँगने के लिए गाँव आते है तो मंदा दो टूक होकर कहती हे कि हमें अस्पताल में डॉक्टर चाहिए नहीं तो हम कोई वोट न देगे। मंदाकिनी विधायक के सामने वोट की कीमत जिस तरह बताती है वह उनको आईना दिखाने जैसा है।

मंदा की दादी का संघर्ष भी ताउम्र बरकरार रहता है, कम उम्र में पति की मृत्यु, उसके उपरांत बेटे की मृत्यु तथा इसके बाद बहु का घर छोड़ जाना। साथ ही मंदा की जिम्मेदारी, उन्हें जिंदगी के तमाम उतार–चढ़ाव को झेलने के लिए विवश कर देती है। जब वह अपनी पुरानी यादों में खोकर उस दुःख को याद करती है वह बहुत ही हृदय विदारक है। इसके विपरीत माँ प्रेमा की स्थिति भी कम संघषशील नहीं है पति की मृत्यु के बाद अपना ससुराल छोड़कर अपनी बेटी के लिए अपनी सास से कोर्ट केस लड़ना कोई हंसी खेल तो नहीं है। उसे अनगिनत यातनाएँ कोर्ट केस वापसी के लिए सहनी पड़ती है। रतन यादव से सारे संबंध उसकी जमीन बिकवाए जाने के साथ खत्म हो जाते है। जब मंदा और उसकी माँ की

दूसरी मुलाकात होती है तो मंदा अपनी माँ की स्थिति देखकर अवाक् रह जाती है। इसलिए अपनी बऊ से वह जिरह कर अपनी माँ को माफ करने के लिए कहती है लेकिन विवश होकर उसे अस्पताल में रूकवाती है।

इनके अतिरिक्त कुसुमा भाभी, शुगना, राउतिने इन पात्रों का संघर्ष भी अपनी अस्मिता को लेकर खासा रहता है। जहाँ कुसुमा भाभी के पति द्वारा दूसरी शादी के पश्चात उनसे कोई संबंध नहीं रहता है तो उनका काकिया सुसर के साथ संबंध होने पर उनके पति द्वारा उन्हें तरह–तरह से प्रताड़ित किया जाता है पर वह उठ खड़ी होती है उनके विरोध में। साथ ही अपने और दाऊजी से उत्पन्न संतान कुंवर को पालती है तथा गर्व से कहती है कि मैं मजदूरी करके भी इसे बड़ा कर सकती हूँ लेकिन तुम्हारे पाले इसे नहीं डालूँगी। यहाँ उनका प्रतिकार भारतीय समाज की परम्परा के खिलाफ अपनी अस्मिता को लेकर है।

शुगना अपने पिता के द्वारा अनमेल विवाह का विरोध करना चाहती है लेकिन अपनी माँ की रक्षा के लिए सब कुछ सहती है। जब हद को अभिलाख सिंह पार कर जाता है तो वह उसकी हत्या कर देती है। अभिलाख की हत्या के बाद वह खुद को अग्नि में आहुत कर देती है।

यह उपन्यास हर वर्ग, हर समाज की छोटी–बड़ी समस्याओं को दिशा प्रदान कर रहा है जिसके मूल में स्त्री अस्मिता के प्रश्न मुख्यतः है। लेखिका द्वारा अपनी नायिका को आत्मानिर्भर बनाने का प्रयास कथानक की शुरूआत से ही किया जाता हैं क्योंकि यह अक्सर देखा जाता है कि परिवार और समाज द्वारा स्त्रियों की इच्छाओं और आकाक्षाओं का दमन निंरतर किया जाता है। इसकें समाधान के लिए साहसी और सशक्त नायिकायें ही मार्ग प्रशस्त करेंगी। जब नायिकाओं के द्वारा अर्थोपर्जन की प्रकिया में खुद को स्थापित कर लिया जाएगा तो अन्य समस्याये स्वतः ही कम/न्यून हो जाएगी।

स्त्रियों के लिए आभूषण सबसे प्रिय वस्तु के रूप में होते है वह चोथड़ों में रहकर भी अपने लिए एकाद आभूषण अवश्य संजोती है लेकिन जब बात स्वाभिमान पर आती है तो वह ग्रामीण स्त्रियां अपनी अस्मिता बोध के लिए अपने सारे आभूषणों को मंदा को देने में तनिक संकोच नही करती है । वही नाइन बऊ द्वारा दो सिक्कों को जों सिक्के कम मिटटी ज्यादा है सभी ग्रामीणों का भाव विभोर कर देता है वह कहती है–

''सरवस लैलो हमारा पर एक बार पिरभुआ का इस पहाड़ की छाती पर टैक्टर लैंके चढ़ जाने दो। फिर तो अपना रास्ता खुद बना लेगा मोरा बच्चा।'' 5

मैत्रेयी पुष्पा ने 'एक स्त्री का घोषणा पत्र' शीर्षक निबंध में लिखा है–

''इतिहास साक्षी है कि पौराणिक युग की पंच कन्यायें– अहल्या, सीता, तारा, मंदोदरी और द्रौपदी विवेकशील स्त्रियाँ थी, लेकिन वे अपने पतिव्रत्य और दैहिक पवित्रता के लिए ही जानी पहचानी गयी। इनके स्वामियों ने अपने विचार को, राय को कभी महत्वपूर्ण नहीं माना, बल्कि आसपास के पुरूषों की मूर्खता पर उन्हें बलिदान करते रहे। यही इतिहास हमारी छातियों पर भी लदा है, इसलिए परिवार की इज्जत आबरू के बराबर वाले पलड़े मे हमारी चारित्रिक शचिता नापी जोखी जाती है, साथ ही हमे विचार शून्या, बुद्धिहीना मानकर हर कुशलता को नजरअंदाज करने का अनवरत सिलसिला चल रहा है।'' 6

इस उपन्यास को ग्रामीण बुन्देलखण्ड़ी जीवन की कथा कहना युक्तिसंगत प्रतीत होता है क्योंकि कथा उन बीहड़ो, जंगलो को मुख्यधारा से अपनी ग्रामीण स्त्री पात्रों के माध्यम से लाती है जो निरा अनपढ़, गवारू है पर वो आत्मसंघर्ष करती है वह तर्क के माध्यम से अपने लिए सवाल करती है। यही बोध स्त्री अस्मिता के केन्द्र में है। जब मकरन्द मंदा को छोड़कर जाता है तो मंदाकिनी का अपनी अस्मिता के लिए यह कहना

''तुम चली जाओ बऊ, हम हरगिज नहीं जाएँगे।'' टाँगो में कम्पन उठते हुए भी अविचल होकर अटल खड़ी रही मंदाकिनी।'' 7

यह एक तरह का धिक्कार है मंदा का कि क्या मंदा का आस्तित्व सिर्फ मकरन्द के साथ होने से है? मंदा का साहसी रूप तब प्रकट होता है जब अभिलाख सिंह उसके दरवाजें पर पहुँचकर उसकी माँ को अभद्र गालियाँ देता है तब सीधे जाकर उसकी गर्दन पकड़कर पूछती है ''क्या कहा? कहना फिर?'' 8 इतने बस से अभिलाख सिंह बिलबिला उठता है और अपना सा मुहँ लेकर वापस चला जाता है।

चुनाव के दौरान पार्टी में से एक व्यक्ति कहता है '' ऐसा गजब न कर देना रामसजीवन त्रिपाठी। यहाँ पर कोई मन्दाकिनी नाम की लड़की है। महाकाली समझो। चुनाव कमिश्नर से लेकर उरई के अखबारों तक में पहुँचा दी है उसने खबर की कि हम वोटों का बहिष्कार करेंगे।'' 9

स्त्री अस्मिता जब धर्म से जुड़कर जनसामान्य को उनके अधिकारों के प्रति सचेत करती है तो वह एक क्रांति के रूप में परिणत हो जाता है जहां हर घटना अपने आप संचालित होती चलती है। कथानक के अंत में मंदा फिर वापस लौटती है सोनपुरा और उसके रोम–रोम में शुगना को लीलने वाली लपटें जल रही है जो उसे पीछें किसी पदचाप की तरह नहीं बल्कि आगें उपस्थित समस्याओं से जूझने के लिए निर्देशित करती है।

निष्कर्षः– मैत्रेयी पुष्पा अपने समय और समाज में घट रही घटनाओं से विमुख नहीं हैं इसलिए वह सच को वर्णित करती है जो बहुत शक्तिशाली है। मंदाकिनी का जीवन कभी खुद के लिए नहीं रहा। वह कथा की शुरूआत से अंत तक एक विराट ह्दय लिए जीती है जिसमें वह सबके दुःख–दर्द को समझने वाली है उसकी मुक्ति के लिए सबको प्रेरित भी करती है सबको समर्थवान बनने पर बल देती है। यही मंदा के अस्मिता को उच्चता के धरातल पर ले जाता है।

संदर्भ–सूचीः–

1. स्त्रीवादी चिंतन की विविध दिशाएँ; डॉ. सरोज सिंह; पृ.–155; साहित्य भंडार
2. इदन्नमम (संक्षिप्त संस्करण); मैत्रेयी पुष्पा; पृ.–128; राजकमल प्रकाशन

3. आधुनिक हिन्दी उपन्यास–2; नामवर सिंह (संपा.); पृ.–267; राजकमल प्रकाशन, 2010
4. छिन्नमस्ता; प्रभा खेतान; पृ–220; राजकमल प्रकाशन
5. इंदन्नमम (संक्षिप्त संस्करण); मैत्रेयी पुष्पा; पृ.–96; राजकमल प्रकाशन
6. स्त्री, परम्परा और आधुनिकता; राजकिशोर; पृ.–168 वाणी प्रकाशन
7. इदन्नमम (संक्षिप्त संस्करण); मैत्रेयी पुष्पा; पृ.–61; राजकमल प्रकाशन
8. इदन्नमम (संक्षिप्त संस्करण); मैत्रेयी पुष्पा; पृ.–130; राजकमल प्रकाशन
9. इदन्नमम (संक्षिप्त संस्करण); मैत्रेयी पुष्पा; पृ.–165; राजकमल प्रकाशन